© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 03 | April - June 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

प्रेमचंद की कहानियों में दलित स्त्री जीवन विमर्श :एक अध्ययन

जागृति, शोध छात्रा (हिन्दी)
चाणक्यपुरी, अहियापुर, पोस्ट- उमानगर, मुजफ्फरपुर |

सार

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में दलित समाज की तत्कालिक परिस्थितियों का यथार्थ अंकन किया गया है। अभावों व उपेक्षाओं से निर्मित उनका दैनिक जीवन दारूणता व करूणा से भरा हुआ है। उनकी कहानियों के सभी पात्र वास्तविक जीवन से मेल खाते हैं। कहीं भी बोझिलता व बनावटीपन ये कहानियाँ पढ़ने के बाद सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, कि पिछडी जाति को अछूत मानकर जो अत्याचार किया गया, वह कितना अमानवीय व घृणित है। प्रेमचंद जी दलितों के सच्चे समर्थक थे। अगर उनके मन में ये भावना ना होती तो, वे अपनी रचनाओं में दलितों की यथार्थ स्थिति का इतना सटीक व मार्मिक चित्रण ना कर पाते। अपनी कहानियों के द्वारा उन्होंने दलितों पर होने वाले हर प्रकार के अत्याचार को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

मुख्य शब्द : कहानि, दलित ,समाज ,परिस्थिति, जीवन इत्यादि ।

प्रस्तावना

"दलित" शब्द का अर्थ है, दबाया गया, कुचला गया, उत्पीड़ित। भारतीय सामाजिक व्यवस्था के सन्दर्भ में 'दलित' सम्बोधन वर्ण व्यवस्था के निचले पायदान पर होने के कारण शताब्दियों से शोषण, दमन व सामाजिक असमानता के शिकार असवर्ण वर्ग के लिए किया जाता है। जब वर्ण व्यवस्था कर्मानुसार न होकर जन्मानुसार हो गयी तो शूद्र समझी जाने वालीं जातियों को शिक्षा व सामाजिक न्याय से वंचित होना पड़ा और कालान्तर में इनकी अस्मिता विलीन हो गयीं। आधुनिक काल में भारतीय नव जागरण के साथ निम्नवर्ण की दुरावस्था की ओर सुधारकों का ध्यान आकुष्ट हुआ। एक ओर तो अस्पृश्यता एवं वर्णगत असमानता को दूर करने हेतु राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, बाल गंगाघर लिलक और महात्मा गाँधी प्रभूलि विमूतियों ने -समाज सुधार' के प्रयत्न किये तो दूसरी ओर ज्योति बा फुले, पेरियार, नारायण गुरू तथा डॉ० मीमराव अम्बेडकर जैसे दलित वर्ग की विमूतियों ने परिवर्तन का स्वर बुलन्द किया। उत्तर आधुनिक दलित विमर्श ने हाशिये के वर्गों को केन्द्र में लाने के लिये "व्यवस्था परिवर्तन" पर बल दिया और

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 03 | April - June 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

बींसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य में दलित-विमर्श तीव्रता से उभरा।

प्रेमचन्दर के कथा साहित्य में दलितों के उत्पीड़न, अत्याचार, विषमता व शोषण के जो चित्र प्रस्तुत हैं, वे मोगे हुए यथार्थ के दलित लेखकों की कहानियों की बराबरी करते हैं। प्रेमचन्द ने वर्ण विभकक्त समाज में दीन-हीन दलितों का पक्ष लेकर अपनी जनचेतना और जनपक्षधरता का स्वाभाविक परिचय दिया है। वस्तुत: प्रेमचन्द को नकार कर जाति को श्रेष्ठा का मानक बनाकर एक नये तरह के ब्राह्मणवाद को गढ़ा जा रहा है। आज प्रेमचन्द को नकारने का उद्देश्य यह जान पड़ता है कि दलित लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में दलित चेतना अवतरित हुई। बल्कि, सत्य यह है कि सवर्ण लेखकों द्वारा निरन्तर न केवल दलित चेतना को रेखांकित किया गया अपितु उसकी मुखर वकालत कीं गयीं। दलित आन्दोलन को सक्रिय बनाने, दलितों में अस्मिता की पहचान को जाग्रत करने के लिये प्रेमचन्द ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से जो स्फुलिंग छोड़ा था वह आज दलित चेतना के अंगारे के रूप में दहक रहा है।

वैश्विक स्तर पर लगभग स्त्री, स्त्री और मनुष्यवैश्विक स्तर पर लगभग स्त्री इसी चक्र में फँसी हुई थी। परंतु राजा राम मोहन राय के निरंतर प्रयासों से अंग्रेजी शासन ने 1829 में सतीप्रथा को बंद कर दिया । आगे महात्मा फुले और सावित्रीमाई फुले ने स्त्री शिक्षा की नींव डाल कर स्त्री उध्दार का सफल प्रयास किया । लडकी के विवाह की आयु 18 वर्ष करने वाला शारदा ऐक्ट लागू हो गया । साथ हि वैश्विक स्तर की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रभाव भी भारतीय परिवेश पर दिखाई देता है। जैसे की स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व का पुरस्कार करने वाली 789 की फ्रांस की क्रांती, सन 887 में ब्रिटन में स्त्रियों को मताधिकार का मिल गया।। इन सभी घटनाओं का भारतीय साहित्य पर प्रभाव होता रहा। भारतीय साहित्य के प्रमुखतम साहित्यकारों में प्रेमचंद ऐसे साहित्यकार है जिनकी कहानियों और उपन्यासों में नारी की समस्याओं का चिंतन हुआ है। वास्तविक रूप से नारी विमर्श की चर्चा प्रेमचंदोत्तर काल में हुई है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य आरम्भिक काल स्त्री-चेतना से ही हुआ है। स्त्री चेतना की सर्वप्रथम प्राथमिकता में स्त्री शिक्षा निहित है। 'भाग्यवती" परीक्षागुरु आदि उपन्यासों में स्त्री चेतना ही मूलाधार है इसी के प्रभाव के चलते आधुनिक काल में प्रेमचंद ने निर्मला के जरिये औसत भारतीय स्त्री की वेदना से युक्त सामाजिक यथार्थ

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 03 | April - June 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

की तस्वीर गढ़ने की कोशिश की है । निर्मला की पीड़ा और दीनता को प्रेमचंद ने तत्कालिन सामाजिक स्थितियों में नारी की अवस्था के रूप में दिखाया है । इस संदर्भ मे प्रेमचंद ने कहते ह कि- "नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है ,उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिए। तभी समाज उन्नति करेगा। प्रेमचंद के साहित्य में नाशै-मावना का एक चुगांतर प्रस्तुत हुआ है । प्रेमचंद अतीत करते हुए सोचते हैं कि "जब तक साहित्य का काम केवल मन बहलाव का सामान जुटाना, लोरियों गा-गा कर सुनना, आंसू बहा कर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता हमारी कसौटी पर सही साहित्य खरा है।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में नारी वर्ग की जिन जिन समस्याओं पर प्रकाश डाला है । वे अधिकांशत: मध्य एवं निम्न वर्ग की नारियों की अपनी ही समस्याएं हैं । प्रेमचंद ने सेवासदन, निर्मला.गोदान आदि उपन्यासों के माध्यम से मध्यम वर्ग की 'डुविधा-भरी परिस्थिति का चित्रण किया है । साथ ही उनकी कहानियों में भी नारी विषयक चिंतन उसी रूप में वा्त हुआ है। जो जैसा है । मध्यम वर्ग की त्रासदि यह है कि वह भले हि बौद्धिक स्तर पर विकासित होता है परंतु आर्थिक अभाव के कारण उसके जीवन अधिक नहीं हो पता। परिणामतः उसकी स्थिति घुटन भरी हो जाती है । आर्थिक अमावो की त्रासदी और सामाजिक मर्यादा-पालन के कारण यह वर्ग अनेक प्रकार की कुरीतियों से लुप्त हो जाता है । इसी कारण यह वर्ग निम्न वर्ग से कही अधिक संतप्त होता है, उसका वर्णन प्रेमचंद के अधिकांश साहित्य में दिखाई देता है ।

मध्यवर्गीय स्त्रियों और निम्नवर्गीय स्त्रियों की समस्याओं का सही आकलन प्रेमचंद करने में सफल है । निम्नवर्गीय स्त्री और दलितों के प्रति व्यापक आदर्शवादी दृष्टिकोन को प्रेमचंद ने अपनाया है । इस संदर्भ में डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत का कथन है कि।'प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित मानवता तथा स्त्रियों के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया है।

इनका आदर्शवाद इनकी ऐसी सहानुभूति का परिणाम है।'बपरेचंद ने नाशी को प्रेम शक्ति का विकास माना है। प्रेमचंद नाशी के विकास में विवाह को बंधन मानते है। वे कहतें है- नारी का जीवन विवाह के बाद बदल जाता है। वैवाहिक असंगतियाँ समाज में अनेक विक्रतियो को पनपने का अवसर देती हैं । प्रेमचंद ने अनुभव किया है कि नारी धन की नहीं बल्कि प्रेम की भूखी है। इसलिए वे प्रेम के अभाव में आजन्म कुवांरी रहने की कल्पना भी कर लेती है। प्रेमचंद के साहित्य देखी गई है। यही कारण है कि धनामाव में ठाकुर कुआ' की गंगा,

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 03 | April - June 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

पूस की रात की मुल्ली, सुगामी" की लक्मी, 'अनुमव' की ज्ञानबाबू की पत्नी, पासवाली' की गुलिया, चमत्कार की चम्पा, बालक' की गोमती, गोदान' की धनिया आदि।

प्रेमचंद जितना पुरुष-जीवन का अंकन करने वाले कथाकार हैं, उतना ही स्त्रियों के जीवन के भी विविध पक्षों को कथा में व्यक्त करते हैं। प्रेमचंद ने कहानियों में दलित समस्या को दलित स्त्रियों की समस्या से अलग करके नहीं देखा है। दलित-पिछड़े वर्ग के स्त्री जीवन की पीड़ा को उजागर करने वाली उनकी कहानियां जैसे दूध का दाम, सुभागी, घासवाली, ठाकुर का कुआं, कफन, सदगति आदि कुछ कहानियों में वर्णव्यवस्था जैसी अमानवीय व्यवस्था के शिकार बनते दलित पुरुष और स्त्रियों की व्यथा का वर्णन है तो कुछ में केवल उन समस्याओं का जिक्र है जिनका सामना केवल दलित स्त्रियों को करना पड़ता है।

स्त्री के बारे में जितने बद्धमूल विचार हैं जो उसे मनुष्य से कमतर मानने की बात कहते हैं, प्रेमचंद उन सभी का खंडन करते हैं। प्रेमचंद ने दलित स्त्रियों को केंद्रीय पात्र बनाकर लिखी सारी कहानियों में वर्णवस्था के प्रश्न को एक जैसी गंभीरता से नहीं उठाया है और शूद्रा जैसी कथा तो काफी कुछ बंबइया फिल्मों के फार्मूले से लिखी प्रतीत होती है। गांव में रहने वाली स्त्री का सवर्ण पुरुष से विवाह, पुरुष का परदेश जाना और फिर उसे ढूंढते हुए किसी प्रकार उसके पास पहुंचना। लेकिन वहां विपरीत स्थितियों के कारण स्त्री और उसके पति दोनों की जान चली जाना। पर 'शूद्रा' कहानी में प्रेमचंद ने धोखेबाज ब्राह्मण का चरित्र निर्मित किया है जो औरतों को फुसलाकर उनका एक प्रकार से अपहरण करता है।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित स्त्री के मन की कोमल से कोमल भावना की उपेक्षा करके उसे केवल विरोध करने वाले यंत्र के रूप में नहीं दिखाना चाहते थे बल्कि उसकी संपूर्ण आंतरिकता की भी खोज करते थे। उन्होंने दलित स्त्रियों के मन में पैठी प्रेम-श्रृंगार, स्नेह तथा सुरक्षा की भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता दिखा कर भी एक नई तरह की स्त्री चेतना के विकसित होने की सूचना दी है।

प्रेमचंद के कथा संसार में दलित स्त्रियाँ

दलित स्त्रियाँ जिस दुहरे अभिशाप यानी जातिगत लांछन के साथ यौन-उत्पीड़न का शिकार बनती हैं, वह दलित पुरुष के शोषण से कहीं अधिक तकलीफदेह है। भावनात्मक और दैहिक शोषण की शिकार दलित स्त्रियों में इस नारकीय यातना के कारण प्रतिरोध और विद्रोह का स्वर पुरुषों की अपेक्षा अधिक साहसपूर्ण

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 03 | April - June 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

है। प्रेमचन्दर कदाचित इस सच की मनौवैज्ञानिकता से अच्छी तरह वाकिफ थे। यही कारण है कि दलित शोषण, उत्पीड़न से संबंधित उनकी कहानियों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्री-पात्र अधिक मुखर हैं।

धर्म के नाम पर बढ़ते पाखंड और कथित राष्ट्रवादियों के आल्हाद के बीच दलित-जीवन और प्रश्नों को प्रेमचन्द के रचना-संसार के आलोक में देखना एक विचारोत्तेजक और दिलचस्प अनुभव है। उदाहरण के लिए प्रेमचंद द्वारा लिखित 'मंदीर', 'पूस की रात' तथा "कफन' इन कहानियों स्त्री-पात्रों की वेदना, पीड़ा, जीवनानुभव और संघर्षशीलता को देख सकते हैं।

निष्कर्ष

निःसन्देह देश में जालिवाद की समस्या भयावाह है। आज दलित साहित्य में जड़-रूढ़ जातिवादी सामाजिक संरचना को बदलने की शकक्तिनिहित है। सदियों से शोषण का शिकार दलित स्त्रियाँ संघर्षरत है कि वह भी स्वतंत्रता, समानता व सम्मान को प्राप्त कर सके। जबकि प्रकृति ने किसी के साथ मेद-भाव नहीं किया तो समाज में मेदमाव क्यों? आज दलित साहित्य सहजता की ओर बढ़ रहा है। समाज में शोषित वर्ग की समस्याओं को सामने लाने वाले दलित साहित्य का भविष्य उज्जवल है।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 03 | April - June 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] प्रेमचन्द का कथा साहित्य : दलित चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में, डॉ. अर्चना घोटे, अमन प्रकाशन,कानपुर

[2] दलित साहित्य का मूल्यांकन, प्रो. चमनलाल, राजपाल प्रकाशन, कश्मीरी गेट, दिल्ली

[3] प्रेमचन्द एक विवेचन, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, इलाहाबाद

[4] सदगति (कहानी), सर्च-राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा 42400, प्रथम संस्करण 2002, पृष्ठ संख्या-॥ 2. वही पृष्ठ संख्या-42

[5] मानसरोवर भाग-, सरस्वती प्रेस बनारस, छठवां संस्करण 4947, पृष्ठ संख्या-34

[6] मानसरोवर भाग-5, सरस्वती प्रेस बनारस, पहला संस्करण १946. पृष्ठ संख्या-47

[7] कफन (कहानी), डायमंड पॉकेट बुक्स, न्यू दिल्ली ॥0020, प्रकाशित वर्ष 20, पृष्ठ संख्या-8

[8] मानसरोवर भाग-5, सरस्वती प्रेस बनारस, पहला संस्करण 4946, पृष्ठ संख्या-8

[9] मानसरोवर भाग-, सरस्वती प्रेस बनारस, छठवां संस्करण 494, पृष्ठ संख्या-35

[10] मानसरोवर भाग-4, सरस्वती प्रेस बनारस, छठवां संस्करण 194, पृष्ठ संख्या-292